21-07-99

फ़रिश्ता सो ज्योतिर्बिन्दु और ज्योतिर्बिन्दु सो फ़रिश्ता – इस महामन्त्र को याद रखो

आप सबके याद का जो संकल्प था, उसी संकल्प से बाबा को मैसेज दिया तो बाबा ने अमृतवेले वतन में बुला लिया। जैसे ही मैं वतन में पहुँची तो बाबा सामने खड़े थे लेकिन ऐसे खड़े थे जैसे और कोई संकल्प में हों। तो मुझे यही वायब्रेशन आ रहा था कि जैसे बाबा मेरे को देख भी रहे हैं, मुस्करा भी रहे हैं लेकिन सामने होते भी और कहाँ हैं। तो जब बाबा के सामने पहुँची तो बाबा हमें देखकर बोले – आओ बच्ची, क्या सन्देश लाई हो? तो मैं

मुस्कराई। मैंने कहा - बाबा, आप कहाँ थे! तो बाबा ने कहा कि यह मेरे जो बच्चे भट्ठी में आये हुए हैं, वह बहुत याद कर रहे हैं। वैसे भी अमृतवेले सभी बच्चे योग में बैठते हैं, याद करते हैं, तो आज विशेष भट्ठी में आये हुए बच्चे मेरे सामने थे। मैने पूछा – बाबा, आपने क्या देखा? बाबा ने कहा कि मैंने देखा कि यह जो ग्रुप है - यह सभी विशेष **मेरी आशाओं के दीपक हैं।** तो मैं देख रहा था कि इन मेरे आशाओं के दीपकों की लौ एकरस है या टिमटिमाती है? तेज है या धीमी है? तो मैने कहा – बाबा, फिर कैसी लौ आपने देखी? बाबा ने कहा कि नम्बरवार तो हैं ही लेकिन इस समय सबके अन्दर एक जैसा उमंग-उत्साह है कि बस, हम बाबा की आशाओं को पूर्ण करें - यह उमंग मैजारिटी में बहुत अच्छे रूप में दिखाई दे रहा है। ऐसे कहते हुए बाबा ने जैसे अपना हाथ वरदान के रूप में उठाया और ऐसे लगा जैसे बाबा वह वरदानी हाथ चारों ओर सभी पर घुमा रहे हैं। दृष्टि दे रहे हैं। बाबा के आगे जैसे यह संगठन है और बाबा सभी को वरदान दे रहे हैं। तो मैं यह सीन देखने में ही बिज़ी हो गई।

फिर उसके बाद बाबा ने कहा – बच्ची, मैंने बच्चों को बहुत-बहुत दिल के प्यार से अविनाशी भव, अमर भव का वरदान दिया। ऐसे कहते फिर बाबा ने कहा – अच्छा बच्ची, और क्या समाचार लाई हो? तो मैं मुस्करा रही थी, मैंने कहा आज तो बाबा के सामने यही नज़र आ रहे हैं, तो मैंने कहा बाबा बहुत अच्छी भट्ठी चल रही है। तो बाबा ने कहा – यह तो मेरे स्पेशल रत्न हैं, इन्हों को मैं एक सीन दिखाता हूँ। तो जादू की उस नगरी में एक सेकेण्ड में पूरा सीन बदल गया।

क्या देखा - बाबा मेरे से थोड़ा दूर एक छोटी लाइट की पहाड़ी पर खड़े हैं, और जैसे पांव से ही ऐसे बटन दबाया तो आप सभी साकार वतन में इमर्ज हो गये, और बाबा ऊपर पहाड़ी पर सूक्ष्मवतन में है। तो बाबा ने कहा - आओ बच्चे, आओ बच्चे, आओ बच्चे... तो ऐसे लगा जैसे आप सबको पंख लग गये और फ़रिश्ते बन साकार वतन से उड़ते-उड़ते बाबा के सामने

सूक्ष्मवतन में पहुँच गये। यह सीन भी बड़ी अच्छी लग रही थी, जैसे बादलों में आप सब फ़रिश्ते बहुत सुन्दर चमक रहे थे और पंख भी बहुत अच्छे लग रहे थे। ऐसे उड़ते-उड़ते जब सभी बाबा के सामने पहुँचे तो चार-पाँच सर्किल बन गये। सभी के पंख, पंख से मिल रहे थे और बीच में यह सिर भी दिखाई देते थे, ऐसे लग रहा था जैसे गुलाब की पत्तियां होती हैं और बीच में बूर होता है, ऐसे चार-पांच सर्किल में आप सब थे और बीच में बाबा खड़े हो एक-एक को दृष्टि दे रहे थे। ऐसे दृष्टि देने के बाद बाबा बोले – बच्ची, अभी बाबा इस ग्रुप के लिए एक विशेष महामन्त्र देते हैं, वह मन्त्र कभी नहीं भूलना, ऐसे बड़े प्यार से बाबा बोल रहे थे।

तो बाबा ने कहा वह मन्त्र है **''फ़रिश्ता सो ज्योतिर्बिन्दु''**। देवता तो पीछे बनेंगे पहले तो बिन्दु बनना है और घर जाना है। तो बाबा ने कहा - ''फ़रिश्ता सो ज्योतिर्बिन्दू, ज्योतिर्बिन्दु सो फ़रिश्ता।'' यह महामन्त्र चलते-फिरते याद रखना। जब भी कर्म में आओ तो फ़रिश्ते रूप में डबल लाइट होकर कर्म में आओ और फिर जब कर्म पूरा हो तो ज्योतिर्बिन्दु बनके घर में जाकर स्थित हो जाओ। यह ड्रिल करना। तो जैसे बाबा डायरेक्ट आप सबसे यह बात कर रहे थे फिर वह फ़रिश्ता रूप जो दिखाई दे रहा था वह समाप्त हो गया।

उसके बाद बाबा ने कहा – यह मेरी आशाओं के दीपक हैं, तो यह क्या कमाल करेंगे? तो बाबा ने कहा कि यह मेरी आशाओं के दीपक सारे विश्व में ऐसी रोशनी करें जो उस रोशनी में बाप की प्रत्यक्षता हो जाये। सभी को बाप दिखाई दे। अब ऐसी ज्योति जगाओ, ऐसी रोशनी दो जो प्रत्यक्ष हो जाये कि हाँ, परमात्मा का कार्य चल रहा है। इसी कार्य में सबको बिज़ी रहना है। ऐसे बाबा ने बातचीत की फिर कहा अच्छा, अभी बच्चों को एक खेल कराता हूँ।

तो खेल भी बहुत अच्छा परखने की शक्ति का था। ऐसे तीन स्थानों पर अलग-अलग रूमाल से कुछ ढका हुआ था। (जैसे भोग रूमाल से ढककर रखते हैं) तो बाबा ने कहा अच्छा, अभी लाइन लगाओ और जिसको जिस

लाइन में जाना है वह जावे। तो तीन लाइनें लग गई। फिर बाबा ने ऐसे हाथ किया तो वह रूमाल हट गये। तीनों रूमालों के नीचे ज्वेल्स (रत्न) थे, जो बहुत चमक रहे थे। तो बाबा ने कहा अभी जो जिस लाइन में है, उसी लाइन में आकर एक-एक रत्न उठाओ। तो लाइन में जब रत्न उठाने गये तो कोई कोई लाइन बदली करने की कोशिश करने लगे। तो बाबा हँस रहे थे। वह ज्वेल्स क्या थे? एक लाइन में थे - बिल्कुल बेदाग हीरे। और दूसरी लाइन में ऐसे हीरे थे जिसमें बहुत महीन (सूक्ष्म) कुछ दाग थे, जो दूर से दिखाई नहीं देते थे लेकिन सामने जाने से पता चलता था और तीसरी लाइन वालों के सामने वाले हीरों में अच्छा दाग था जो दिखाई देता था। तो बाबा ने कहा - अभी जिस लाइन में जो है, वही उठाओ। तो सभी हंसने लगे। फिर सभी ने उठाया तो लेकिन जिसके पास दाग वाला आया वह जैसे सोचने लगे कि यह तो मेरे लायक नहीं है। उनकी शक्ल थोड़ी बदल गई। तो बाबा ने कहा देखो अभी हीरे में दाग देख करके आपकी शक्ल बदल गई। यानि सोचती हो यह ठीक नही है, हमको तो बेदाग हीरा चाहिए। फिर बनने में क्या सोचती हो? जैसे दाग वाला हीरा उठाने में अच्छा नहीं लगता तो जब प्रैक्टिकल लाइफ में आप हीरे हो, उसमें आपको दाग पसन्द आता है? अगर वह दाग पसन्द नहीं है तो फिर जीवन में कोई सूक्ष्म दाग भी है तो वह क्यों पसन्द आता है? वह भी नहीं आना चाहिए!

तो बाबा ने कहा अच्छा दो लाइन वाले सब हीरे रख दो। सभी ने वहाँ ही वह हीरे वापस रख दिये। फिर बाबा ने अपने हाथ से एक-एक को बेदाग हीरे की गिफ़्ट दी और कहा कि बाबा की यह गिफ़्ट याद रखना। बीती सो बीती लेकिन अब के बाद **बेदाग हीरा बनना ही है।** यह नहीं सोचना कि बनेंगे, कोशिश करेंगे, देखेंगे क्या होता है .... लेकिन **क्या भी हो जाए - हमें बेदाग बनना ही है।**

फिर बाबा ने जैसे सभी को शुरू-शुरू की एक बात सुनाई। उस समय बाबा बच्चों को कहानी के रूप में कहते थे – बच्ची, इतनी मिर्ची खायेंगी?

इतना मटका पानी पियेंगी?... फिर हाथ से आँख के सामने ऐसे करते थे, तो अगर आँखें हिल जाती थी तो कहते थे – फेल! और नहीं हिली तो पास। ऐसे बाबा खेल कराते थे। तो बाबा ने कहा तुम छोटेपन में जब थे तो तुमको बाबा यह खेल कराता था। तो यह खेल भी याद रखना कि कहाँ भी आँख ऐसे झुके नहीं। बस, बाबा नयनों में हो।

तो बेदाग हीरा बनना, आशाओं का दीपक एकरस रखना, नयनों में एक बाबा को बसाना - यही बाबा का बच्चों प्रति सन्देश है, यही बाबा की यादप्यार है। ऐसे यादप्यार लेते मैं साकार वतन में आ गई। अच्छा – ओमशान्ति।